# सत्संग सारामृत

**हरि नाम जग में सार है,**
**गोविन्द भज गोविन्द भज ॥**

प्रकाशक

श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान

गहवर वन, बरसाना, मथुरा

उत्तर प्रदेश २८१ ४०५

भारतवर्ष

प्रथम संस्करण

प्रकाशित ९ जुलाई २०१७

गुरुपूर्णिमा, आषाढ़, शुक्लपक्ष, २०७४ विक्रम सम्वत्

सर्वाधिकार सुरक्षित २०१६ – श्री मानमंदिर सेवा संस्थान

Copyright© 2016

Shri Maan Mandir Sewa Sansthan

http://www.maanmandir.org

ms@maanmandir.org

# प्रकाशकीय

श्रीबाबा महाराज की अलौकिक वाणी से प्रवाहित हुए दिव्य उपदेशामृत से श्रद्धालु भक्तजनों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से इस संक्षिप्त पुस्तिका 'सत्संग सारामृत' का प्रकाशन किया गया है, जिससे सुलभतापूर्वक पूज्य श्री के शब्दों को आत्मसात किया जा सके ।

# श्री रमेश बाबा जी महाराज

गुण-गरिमागार, करुणा-पारावार, युगललब्ध-साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा-वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मंद मति की गति विथकित हो जाती है ।

**विधि हरि हर कवि कोविद बानी ।**
**कहत साधु महिमा सकुचानी ॥**
**सो मो सन कहि जात न कैसे ।**
**साक बनिक मनि गुन गन जैसे ॥**

(रा.च.मा.बाल. ३)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है ।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह लेख, मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पायेगा, अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में । सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य विभूति का प्रकर्ष आर्ष जीवन चरित्र कहीं लेखन-कथन का विषय है?

मलिन अन्तस् में सिद्ध संतों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक-लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की ।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य-दान दिया । माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे । ईश्वरीययोजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में । दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल (शुक्ल भगवान् जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को संतान सुख अप्राप्य रहा, संतान प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र कामना ने व्यथित किया । पुत्र प्राप्ति की इच्छा से कठिन

यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया । आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया । शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

"यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव-जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है ।"

वही हुआ, गुरु-शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्प काल में अध्ययन समापन भी हो गया ।

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से । सर्वक्षेत्र कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन-

वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े-बड़े संगीतमार्तण्डों को । प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का । अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके । अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर ।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण-परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया, सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास स्थल पूज्यपाद का भी वनवास स्थान रहा । "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में ।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार-बार पाद-पद्मों को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए

बरसाना । मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया । मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है । बरसाने में आकर तन-मन-नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए । श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरंतर राधारससुधा सिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्ज्वल कान्ति से आलोकित-अलंकृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया ।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान बरसाना, बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित गहवर वाटिका "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गहवरवन में भी महासदाशया मानिनी

का मन-भावन मान-स्थान श्री मानमंदिर ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा । मानगढ़, ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है । उस समय तो यह बीहड़ स्थान दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मंदिर प्रांगण में न आने देता । मंदिर का आंतरिक मूल स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था । चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः"–चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप-पंक के चोर को भी एवं रकम-बैंक के चोर को भी । ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे, इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोहदृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरुप जो ठहरे । फिर तो शनैः-शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया ।

जग-हित-निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं ।

श्रीमन् चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार गाँवों में, प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है । ब्रज के कृष्ण लीला सम्बंधित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ-साथ सहस्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी किया । अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें, सन् २००९ में "राधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा । समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनामसंकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य-गान हुआ, नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया । दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य सत्ता भी नत हो गयी । गौवंश के रक्षार्थ गत् ९ वर्ष पूर्व माता जी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने

विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ४५,००० गायों का मातृवत् पालन हो रहा है । संग्रह परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की भगवन्नाम ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है ।

परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य संपादित किये, इन ब्रज संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने, गत पञ्चषष्टि (६५) वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं । ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं । असंख्यों आपके सान्निध्य-सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं, इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय । वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व । रसोदधि के जिस अतल-तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया ।

आपकी आंतरिक स्थिति क्या है, यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है । आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का सौख्य इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही संभव है । आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रासेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित कृतियाँ हैं ।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है । साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन । दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्ज्वल पुंज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केंद्र बन गयी । सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं । आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वंदन, अनुक्षण प्रणति भी न्यून है ।

**********

* धन-सम्पत्ति, मान-प्रतिष्ठा चाहने वाले के मन में कृष्ण कभी नहीं आएँगे, चाहे वह कितना भी भजन-साधन क्यों न कर ले? कृष्ण तो वासना शून्य हृदय में ही आते हैं । जब तक एषणायें हैं, 'एषणायें' माने प्यास अर्थात् भोगों की प्यास, मान-प्रतिष्ठा की प्यास, धन-सम्पत्ति ...आदि की प्यास; तब तक भगवान् कभी नहीं आयेंगे । जब समस्त एषणायें चली जायेंगी, तब तुम बुलाओगे तो भगवान् दौड़े-दौड़े चले आएँगे, फिर तुम धक्का देकर भी बाहर निकालोगे तो भी तुम्हारे हृदय से नहीं जाएँगे और तुम्हारे वश में हो जाएँगे ।

* अगर कृष्ण-भक्तों का संग मिल जाये तो मोक्ष से भी ज्यादा उपलब्धि समझो ।

* जहाँ केवल हर समय उत्तमश्लोक भगवान् की चर्चा होती रहती है, जहाँ ग्राम्य कथा अर्थात् संसारी चर्चा नहीं है, वहाँ जाकर रहो, वहाँ रहने मात्र से ही तुम्हारी बुद्धि अपने-आप भगवान् में लग जायेगी ।

* कितनी भी सुन्दर स्त्री है, आखिर उसके शरीर से निकलता तो है मल-मूत्र ही और उस मल-मूत्र पर मरने वाले अर्थात् मल-मूत्र की पिण्डी स्त्री से भोग-सुख चाहने वाले क्या भक्त हो सकते हैं?

* धीर कौन है? जो अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करता है ।

* मनुष्य जब खाली बैठता है तब उसे काम, क्रोध, लोभ, मोहादि सभी शत्रु सताते हैं। एक कहावत है –

**An empty mind is a devil's workshop.**

(खाली मस्तिष्क (मन) शैतान का कारखाना बन जाता है ।)

* लोग कहते हैं कि भगवान् से मिलना बड़ा कठिन है, कठिन तब है जब हम भगवान् से दूर रहते हैं। मन भगवान् में नहीं रहता तब कठिन है। गीता में भगवान् ने प्रतिज्ञा की है कि मेरा मिलना बड़ा आसान है –

**अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।**
**तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥**

(गी. ८/१४)

तुम्हारा मन कहीं इधर-उधर न जाए । जो मेरा नित्य-निरन्तर स्मरण करता है, उसके लिए मैं सुलभ हूँ अर्थात् बहुत जल्दी मिल जाऊँगा । अनन्यचित्त से मेरा नित्य स्मरण करो, नित्ययुक्त हो जाओ, फिर मेरा मिलना बहुत आसान है । जब मनुष्य निरन्तर लगा रहता है तो भगवान् उसके हृदय में आ जाते हैं ।

* भजन क्या है? कुछ लोग कहते हैं कि हमने इतनी देर पाठ किया, जप किया, इतनी देर सेवा की, इतनी देर कीर्तन किया लेकिन वह भजन नहीं है, वह तो नियम-पूर्ति है । भजन तो वह है जो चौबीस घंटे चलता रहे ।

* एक प्रमादी साधु सैकड़ों को चिलम लगाना, गप्प मारना, परनिदा करना, राग-द्वेष आदि में

फँसा देता है । प्रमाद जीवन नष्ट कर देता है । इसलिए प्रमाद हटाना आवश्यक है, जिसमें प्रमाद नहीं है वह गृहस्थी भी साधु से अच्छा है । नुक्सान तब है जब साधु होकर भी कुछ नहीं करता है । खाली समय बैठा है, सो रहा है, वह न कुछ भजन कर सकता है और स्वयं तो नष्ट होगा ही आस-पास वाले को भी नष्ट कर देगा । इसलिए मनुष्य को साधनशील का संग करना चाहिए । बेकार बैठने वाले के साथ कभी नहीं बैठो ।

* भक्ति का सार है–सेवकों (भक्तों) की सेवा करना । भगवान् को सेवक इतना प्यारा है कि भगवान् अपनी सेवा से उतने खुश नहीं होते, जितने कि भक्त की सेवा से प्रसन्न होते हैं ।

इसलिए भगवान् की सेवा के साथ-साथ भक्तों की सेवा भी करो, यही भक्ति का सार है ।

* काम जलाना कोई कठिन बात नहीं है, अगर अच्छे विशुद्ध संत का संग मिल जाए, जिसके पास काम नहीं है, क्रोध नहीं है तो उसके संग से तुम्हारे अन्दर की कामवृत्ति दग्ध हो जायेगी किन्तु भगवान् जिस पर कृपा करते हैं, उसी को ऐसे विशुद्ध संतों (महापुरुषों) का संग मिलता है । विशुद्ध संत भगवान् की पूर्ण कृपा की गारन्टी है । भगवान् की कृपा का लक्षण है 'विशुद्ध संत का मिलना' ।

**संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही ।**
**चितवहिं राम कृपा करि जेही ॥**

(रा.च.मा.उत्तर. ६९)

* भागवत में लिखा है –

**आयुः श्रियं यशो धर्मं लोकानाशिष एव च ।**
**हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥**

(भा. १०/४/४६)

जब मनुष्य भगवद्भक्तों का अपराध करता है तो उसी समय उसकी आयु नष्ट हो जाती है । हमको दिखाई नहीं पड़ता लेकिन उसकी आयु नष्ट हो जाती है, श्री नष्ट हो जाती है, यश-ऐश्वर्य नष्ट हो जाता है, सब धर्म नष्ट हो जाता है, संसार में जितना भी उसका प्रभाव है, सम्बन्ध है, सुख-सम्पत्ति आदि सब नष्ट हो जाते हैं । जितने कल्याण के साधन हैं, सब नष्ट हो जाते हैं । यह सच्चा अनुभव है । देश में बड़े-बड़े प्रभावशाली लोग थे पर उन्होंने भक्तों से द्रोह किया तो सब समाप्त हो गए । न उनकी श्री रही, न कीर्ति रही । इसलिए चाहे साधक हो चाहे सिद्ध सभी

को सावधान रहना चाहिए ताकि भक्तापराध न होने पाए ।

* शरीर का एक-एक अंग, प्रत्येक इन्द्रियाँ हाथ, पाँव, आँख, कान....आदि सब भगवत्सेवा में लग जायें, इससे बड़ा कोई यज्ञ नहीं हो सकता ।

* स्वभाव तभी बदलता है जब किसी निष्किचन महापुरुष की शरणागति होती है । प्रह्लाद जी ने कहा है –

**"महीयसां पादरजोऽभिषेकं**
**निष्किञ्चनानां न वृणीत यावत् ॥"**

(भा. ७/५/३२)

बिना महापुरुषों की शरणागति के स्वभाव कभी भी भगवान् की ओर नहीं जाएगा, क्योंकि

हमारा स्वभाव विषय-भोगों में फँसा हुआ है, हमारी बुद्धि भगवान् में लग ही नहीं सकती है ।

* तुलसीदास जी ने लिखा है –**'गृह कारज नाना जंजाला'** सैकड़ों जंजाल हैं गृहस्थ में ।

इसीलिए स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है –

**"An unmarried person is half free from the world."**

'जो अविवाहित व्यक्ति है, वह आधा भवसागर पार हो गया ।'

* जब मनुष्य मरने लग जाता है तब वह तीनों लोकों की संपत्ति भी यदि घूस में दे दे लेकिन फिर भी उसकी एक श्वांस भी बढ़ नहीं सकती है । इसलिए महापुरुषों ने कहा है कि तीन लोक की संपत्ति अगर जाती है तो जाने दो लेकिन

भगवान् के भजन बिना श्वांस को वृथा नष्ट मत करो ।

**तीन लोक की सम्पदा, स्वांस सम नहिं होय ।**
**सो स्वांसा रघुनाथबिन, तुलसी वृथान खोय ॥**

* जो गुरुजन भगवान् से मिलने का उपदेश देते हैं, वे भगवान् से बड़े होते हैं और वही हमारे सबसे बड़े सुहृद हैं –

**तुलसी सो सब भाँति परम हित,**
**पूज्य प्रानते प्यारो ।**
**जासों होय सनेह राम-पद,**
**एतो मतो हमारो ॥**

यह जीव भूला हुआ है, इसे भगवान् से मिलने की याद ही नहीं है; बस खाने-पीने, घूमने-फिरने, भोग-भोगने आदि में ही लगा हुआ है । अतः इसको विशुद्ध सन्तजन याद दिलाते हैं –

'अरे भाई! भगवान् से मिलने के लिए तुम मनुष्य बने हो ।' तब उसको याद आती है –'हाँ, मुझे भजन करना है ।' नहीं तो कौन भजन करता है, लड्डू-पूड़ी, कचौड़ी, भोगादि में ही सारा जीवन चला जाता है, इसलिए किसी ऐसे विशुद्ध सन्त के सत्संग की आवश्यकता होती है जो स्मृति को जगा दे ।

* हम मनुष्य बनकर भी **'जिन तन दियो, ताहि बिसरायौ, ऐसौ नमक-हरामी ।'** नमक हराम प्राणी हैं क्योंकि हम शरीर को बनाने वाले (भगवान्) को ही भूल जाते हैं, यह सबसे बड़ा पाप (गुनाह) है । हमको नित्य उनकी ओर चलना है, उनको रिझाना है, उनको प्रेम करना है । उन्होंने अनुग्रह किया है, अहैतुकी कृपा की

है, प्यार किया है तभी तो इतना सुन्दर मनुष्य शरीर दिया । इसलिए हर समय भगवान् की आराधना करो, थोड़ी देर में हम मर जायेंगे, ये शरीर जाने वाला है, हमेशा याद रखो कि यह हँसने-खेलने का समय नहीं है ।

**माटी कहै कुम्हार सों, तू क्या रूँधै मोय ।**
**इक दिन ऐसा आयेगा, मैं रूँधूंगी तोय ॥**

* छोटे बनो, गर्व की वाणी कभी नहीं बोलो, यह एक बड़ा अपराध है, अपनी तारीफ कभी मत करो, अपनी बुराई करो । जो कुढ़ता है, ईर्ष्या करता है, उससे भगवान् खुश नहीं होते हैं, उसकी छाती तोड़ देते हैं । उसको आसुरी योनि में भेज देते हैं । भगवान् गीता जी (१६/१८, १९) में कहते हैं कि जो लोग द्वेष करते हैं,

उनको मैं आसुरी योनियों में भेज देता हूँ । इसलिए किसी से ईर्ष्या नहीं करो, किसी से द्वेष नहीं करो, किसी की बुराई मत करो अन्यथा आसुरी योनि मिलेगी और यदि ऐसा नहीं मानोगे तो भगवान् तुम्हारी छाती तोड़ देंगे, तुम्हे असुर बना देंगे । अतः ईर्ष्या-द्वेष करना छोड़ दो ।

* तुम छोटे बन जाओगे तो भगवान् के प्यारे बन जाओगे और नहीं तो प्रभु तुम्हारी छाती तोड़ देंगे । सब भक्तों के चरण पकड़ो, इससे भगवान् खुश हो जाएँगे । सबसे बड़ा उपदेश यही है कि परद्रोह, ईर्ष्या मत करो, नहीं तो दो मिनट में नष्ट हो जाओगे, द्रोह नहीं करोगे तो भवसागर निश्चित पार हो जाओगे ।

* अरे मूर्ख! कमललोचन कृष्ण से प्रेम करने के लिए शरीर मिला था लेकिन तूने इसे विषयों में लगा दिया, धिक्कार है तुझे ।

* बारह दिव्य गुणों से युक्त कोई ब्राह्मण भी है और उसमें भक्ति नहीं है, वह भक्तिहीन है तो उससे भक्तियुक्त चाण्डाल अच्छा है ।

* संसार क्या कहता है, ये जो सोचता है, वह संसार का भक्त है, भगवान् का भक्त नहीं है । भगवान् का भक्त तो निरपेक्ष होता है; वह किसी से मान-सम्मान नहीं चाहता है । कोई क्या कहता है, यह सोचना ही अपने इष्ट से विमुखता है ।

* संसार के सभी धर्म झूठे हैं, उनसे कुछ नहीं मिल सकता । इसीलिये भगवान् ने गीता

(१८/६६) में कहा कि अधर्मों को नहीं, धर्मों को छोड़ो 'सर्वधर्मान्परित्यज्य' तब तुम मेरी शरण में आओगे औरधर्मों को छोड़ने का पाप नहीं लगेगा, पाप से मत डरो, उस पाप से मैं तुम्हें छुड़ाऊँगा ।

* धन-संपत्ति, भोग आदि पाने के बाद ऐसा संसार में कोई नहीं जो न पछताया हो । प्रत्येक वृद्ध व्यक्ति से पूछो कि तुमने जीवन भोगों में बिताया तो क्या मिला तुम्हें? भोग के कारण दुःख और केवल दुःख में ही मरोगे । दुनिया में ऐसे-ऐसे राजा हुए जिनके पास स्फटिक मणियों के महल थे, अपार धन, हाथी-घोड़ा, सेनायें और चंद्रमा के समान मुख वाली स्त्रियाँ थीं

लेकिन अंत समय श्मशान में उन्हें जलना पड़ा क्योंकि भोग और ऐश्वर्य का परिणाम यही है ।

* वहाँ जाओ, जहाँ नित्य कथा-कीर्तन है । श्रद्धा से उसे सुनो, भले ही जप-तप मत करो । वहाँ पड़े रहो, सुनते रहो, महात्माओं की सेवा करो, भक्तों की सेवा करो, पुण्यतीर्थ (भगवद्धाम) में संत-भक्त ज्यादा रहते हैं, उनके संग से भगवान् में रुचि पैदा हो जायेगी और भोगों से रुचि हट जायगी । कथा–कीर्तन का श्रवण एवं गान करने से ही भगवान् तुम्हारे हृदय में आकर तुम्हारे अंतःकरण की गन्दगियों को दूर कर देंगे ।

* अनादिकाल से हर व्यक्ति पर अनेकों ऋण हैं जैसे देवऋण, प्राणियों के ऋण, माता-पिता का

ऋण, मनुष्यों के ऋण, पितृश्वरों का ऋण, ऋषिऋण; इनको कोई कहाँ तक चुकायेगा । सर्वात्मभाव से भगवान् की शरण में चले जाओ, सब ऋण चुक जाएँगे ।

* जो अपने स्तोत्र (मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, बड़ाई) से घृणा करता है, जैसे किसी लज्जाशील पुरुष को समाज में अपनी निन्दा सुनकर दुःख होता है, किसी की चोरी या छिनारी समाज के बीच में रखी जाए तो उसे जैसा दुःख होता है ठीक वैसा ही जिसको अपनी प्रशंसा से दुःख होता है वह ईश्वर रूप है ।

* मन से भी विषय-भोगों के बारे में न सोचा जाए, मन ही न जाए विकारों में, उसको कहते हैं

'ब्रह्मचर्य', उससे मन, बुद्धि, इन्द्रियों में शक्ति आ जाती है ।

* आसक्ति अगर संसार के सम्बन्धों घर-परिवार, स्त्री, पुत्र, माँ-बाप, पैसा आदि में कहीं भी है तो वह बन्धन है और अगर भगवान् में या महापुरुषों में आसक्ति है तो मुक्ति का खुला द्वार है ।

* वह गुरु, गुरु नहीं है; वह स्वजन, स्वजन नहीं हैं; वह माँ, माँ नहीं है; वह बाप, बाप नहीं है; वह दैव, दैव नहीं है; वह पति, पति नहीं है; जो मृत्यु से छूटने का रास्ता नहीं बताता है । जो भगवान् की शरणागति न बताये, उसको छोड़ दो; यह भगवान् की आज्ञा है ।

* जो कृष्ण नाम देता है, कृष्ण-कथा का दान देता है, वह संसार का सबसे बड़ा दाता है ।

* यदि तुम किसी प्राणी का अपराध नहीं कर रहे हो तो तुम्हारी सभी परिस्थितियाँ सफल हो जायेंगी, सिद्ध हो जायेंगी; नहीं तो सब परिस्थितियाँ विपरीत हो जायेंगी, जैसे रावण के पास कितनी बड़ी सेना थी लेकिन कोई काम नहीं आया, सब असफल रहे क्योंकि –

**बिफल होहिं सब उद्यम ताके ।**
**जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥**

(रा.च.मा. लंका. ९२)

सब उद्यम चाहे व्यापार है, चाहे नौकरी है, विफल हो जाते हैं यदि जरा भी द्रोह आ जाता है । द्रोह क्या है? प्राणी समझता नहीं, समझना भी नहीं चाहता । किसी में अभाव करना द्रोह

है, किसी का नुक्सान सुनकर हर्षित होना द्रोह है, किसी की निन्दा करना द्रोह है, इन सबसे जो छूट जाता है, उसके सारे उद्यम सफल हो जाते हैं ।

* भजन चाहे कम करो पर भक्तापराध से बचो।

* भक्तों के ऊपर अपने तेज का, शक्ति का प्रयोग किया तो तुम्हारा मंगल कभी नहीं हो सकता चाहे माला फेरो, चाहे गोपाल जी की पूजा करो, कुछ नहीं होगा ।

* देवगुरु बृहस्पति जी ने कहा –

**सीतापति सेवक सेवकाई ।**
**कामधेनु सय सरिस सुहाई ॥**

भगवान् का जो सेवक है उसकी सेवा, सैकड़ों कामधेनुओं से बड़ी है । गौ माता तो है ही पूज्य

लेकिन गौ से भी ज्यादा पूज्य है भक्त की सेवा, इसका ज्ञान नहीं है लोगों को ।

* तुम्हारा मन तभी निर्मल होगा, जब तुम्हारी इन्द्रियाँ राग-द्वेष से रहित हो जायेंगी ।

* वाल्मीकि जी ने श्रीराम जी से कहा था –

**राम भगत प्रिय लागहिं जेही ।**
**तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥**

(रा.च.मा.अयोध्या. १३१)

जिसको आपके भक्तों से प्रेम है, उसके हृदय में जाकर रहो । जो भक्तों में भेदबुद्धि करता है, घृणा करता है, वहाँ भगवान् नहीं आयेंगे, चाहे सौ जन्म तुम साधु बनकर घूमते रहो ।

* जब तक तुम्हारे अन्दर मद है–जन्म का मद, ऐश्वर्य का मद, बड़प्पन (मालकियत) का मद,

श्री (धन) का मद, विद्वता का मद (हम बड़े विद्वान् हैं) तब तक तुम अकिचन नहीं हो ।

* ये जितनी भी देह, गेहादि की आसक्तियाँ हैं, ये भगवान् से दूर करती हैं ।

* भगवान् का अपराध कर लो, भगवान् कभी नाराज नहीं होते हैं, भगवान् कृपामय हैं लेकिन अगर भक्तों का अपराध करोगे तो तुम नहीं बचोगे, चाहे तुम तपस्वी हो, विद्वान हो । भक्तों से प्रेम नहीं हुआ तो कभी भी भक्ति नहीं मिलेगी ।

* ब्रह्म अनंत है, उस अनंत को पाने के लिए अनंत साधन कौन कर सकता है केवल उसकी शरण में जाओ । वह स्वयं मिल जाए तो ठीक है अन्यथा साधनों से कोई उन्हें नहीं पा सकता है ।

* भोग और ऐश्वर्य दो चीजें हैं, जिन्हें मनुष्य छोड़ नहीं सकता है और इनको छोड़े बिना भगवान् का भजन कभी हो नहीं सकता क्योंकि ये चीजें भगवान् से अलग कर देती हैं, भगवान् में बुद्धि लगने ही नहीं देती हैं ।

* हर मनुष्य के रोम-रोम में मल भरा है । शौच के समय मनुष्य प्रतिदिन अपने मल-मूत्र को देखता है लेकिन उसे इस गंदे शरीर से वैराग्य नहीं होता ।

**वसाशुक्रमसृङ्मज्जा मूत्रविड्घ्राणकर्णविट् ।**
**श्लेष्माऽश्रुदूषिका श्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः ॥**

(मनुस्मृति ५/१३५)

वसा, शुक्र, रक्त, मज्जा, मूत्र, मल, नाक का मल, कान का मल, कफ, जुआँ, पसीना, आँसू आदि ये सब मल ही शरीर के रूप में हैं । ऐसे

मलों से भरे शरीर से जीव की आसक्ति नहीं हटती, यही भगवान् की विचित्र माया है ।

* श्रद्धा के बिना कोई चीज फल नहीं देती है, न दान, न तप, न सत्संग और न किसी सद्ग्रन्थ का पाठ । भगवान् ने गीता में कहा –

**अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।**
**असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह॥**

(गी. १८/२८)

श्रद्धा रहित यज्ञ, दान, तप या जो भी शुभ कर्म किया जाता है, वह सब असद् हो जाता है इसलिए पहली चीज है 'श्रद्धा' ।

* क्या इस मलमय दुर्गन्धयुक्त शरीर में अथवा तुच्छ क्षणिक मृगतृष्णामय भोगों में आनन्द की प्राप्ति संभव है? कदापि नहीं ।

* विद्या पढ़कर यदि मनुष्य के जीवन में शील नहीं आया, नम्रता नहीं आयी, विनय गुण नहीं आया तो वह विद्या नहीं है उसने तो मनुष्य को असुर बना दिया । क्या शुक्राचार्य कम पण्डित थे, रावण जैसा तो कोई पण्डित ही नहीं था लेकिन वह राक्षस बोला गया । वही विद्या वास्तविक विद्या है जो शील गुण देती है ।

* केवल वेष-परिवर्तन करने से साधु नहीं बनते, जो तन-मन-वचन से आराधनरत् है, वही असली साधु है ।

* यह मनुष्य शरीर विषय-भोंगों के लिए नहीं मिला है अपितु आत्मकल्याण के लिए मिला है। विषय-भोग तो चौरासी लाख योनियों में कुत्ते, बिल्ली, गधे आदि सभी भोगते हैं । यह शरीर

जो दुर्लभ ही नहीं बल्कि सुदुर्लभ अर्थात् बहुत दुर्लभ है; देवताओं को भी नहीं मिलता; अनन्त जन्मों के बाद यह मिला है और वह भी थोड़ी देर के लिए; इसलिए जब तक मौत नहीं आती, तभी तक प्रयत्न कर लो भगवान् से मिलने का, मृत्यु आने के बाद कुछ नहीं कर पाओगे ।

* जिसके अन्तःकरण में भगवद्भक्ति है–प्रेत, पिशाच, राक्षस, ब्रह्मराक्षस आदि चाहे कितने भी प्रबल असुर क्यों न हों, ये सब भगवद्भक्त को छू भी नहीं सकते अर्थात् भक्त के सामने टिक भी नहीं सकते हैं ।

* भक्ति-मार्ग पर कोई-कोई ही चल पाता है, उस रास्ते पर दो दुर्गम घाटियाँ हैं, एक तो है धन-दौलत (धन-सम्पत्ति) और दूसरी सुन्दर स्त्री ।

इन दो दुर्गम घाटियों को जो पार कर गया वह भक्ति-मार्ग पर चल सकता है ।

* 'भक्त का दर्शन' भगवान् के दर्शन से बड़ा होता है । स्वयं भगवान् ने कहा–हमारे भक्त को भोजन करा दो, हमें भोग लगाने से वह ज्यादा बड़ा है, हमारे भक्तों के नाम का कीर्तन करो, वह हमारे नाम-कीर्तन से बड़ा है । भक्तों की पूजा करो, वह हमारी पूजा से बड़ी है ।

**षष्ठिवर्ष सहस्राणी विष्णोराराधनं फलम् ।**
**सकृद्वैष्णव पूजायां लभते नात्र संशयः ॥**

साठ हजार वर्ष तक कोई भगवान् की पूजा करे और भक्त की पूजा एक बार कर ले, तो साठ हजार वर्ष तक विष्णु की पूजा से बड़ी है 'एक बार भक्त की पूजा करना' ।

* विपत्ति जो चाहता है, वही सच्चा भक्त है; जो भोग चाहता है, सुख चाहता है, वह भक्त नहीं है, वह बनिया है ।

* अपने इष्ट का आश्रय तभी सिद्ध होता है, जब संसार के सभी आश्रय छोड़ दिये जाएँ ।

* संसार में पुरुष स्त्री की जूठन चाटता है, स्त्री पुरुष की जूठन चाटती है । जूठन चाटना तो छोटी बात है, भोग में मनुष्य मल-मूत्र खाता है, मल-मूत्र पीता है । सभी इन्द्रियाँ अपने विषयों को खाती हैं, पीती हैं; नीचे की इन्द्रिय मल-मूत्र को खाती-पीती है। शरीर मनुष्य का है लेकिन कुत्ते की तरह मल-मूत्र को खाते-पीते हैं । भागवत् के अनुसार हर मनुष्य जो भोग-भोगता है, वह गधा है, कुत्ता है, सुअर है, ऊँट है

क्योंकि भगवान् का नाम छोड़कर दिन-रात भोगों में रमण करता है ।

* सच्चा रास्ता यही है–जिसकी उपासना करते हैं, उसी की वासना करें, लड्डू-पेड़ा ये सब नहीं ।

**जाकी उपासना ताही की वासना,**
**ताही को नाम-रूप-गुण नित्य गाइये ।**

केवल उन्हीं का नाम, रूप, गुण गाया जाय, यही अनन्य धर्म है, इसी को अनन्य भक्ति कहते हैं।

* भागवत धर्म में केवल भगवान् ही सब कुछ हैं, केवल भगवान् की शरणागति ही सब कुछ है । जीव का कर्तव्य यही है कि वो भगवान् की शरण में चला जाए । न माँ, न बाप, न पुत्र-पुत्री, न स्त्री, न पति, एकमात्र भगवान् ही सब

कुछ हैं, सारे सम्बन्ध एकमात्र भगवान् से ही होने चाहिए ।

* किसी ने बड़ा तप किया है, बड़ा दान दिया है, बड़ा यज्ञ किया है, बहुत व्रत किए हैं, बड़ा पवित्र है, सब ठीक है परन्तु अगर भगवान् में प्रेमाभक्ति नहीं है, तो सब कुछ बेकार है क्योंकि निर्मल भक्ति से ही भगवान् प्रसन्न होते हैं । अगर निर्मल भक्ति नहीं तो बाकी सब ढोंग है ।

* संसार में सबसे बड़ा शुभ है–जीव भगवान् की शरण में चला जाय, इसके बिना सभी शुभ, अशुभ हैं ।

* अनन्य ये नहीं है कि हम केवल अपने इष्ट का नाम ले लें और दूसरे के नाम से चिढ़ें । सब कुछ भगवान् ही है, हमारा इष्ट ही है ।

**निज प्रभुमय देखहिं जगत,**
**केहि सन करहिं बिरोध ॥**

एक अपने इष्ट को सब जगह देखना यही अनन्यता है ।

**वासुदेवं सर्वं इति स महात्मा सुदुर्लुभः ।**

* जिसके अन्दर भक्ति है वो संसार का सबसे बड़ा धनी है ।

* अधर्म करने वाले की सूचना देने वाले या चर्चा करने वाले को भी पाप लग जाता है ।

* कोई महापुरुष मिल जाय उसी के पीछे चले जाओ तो कल्याण है ।

* हम जैसे लोग नाम रख लेते हैं 'हम रसिक हैं' और लड्डू-पेड़ा घोटते हैं, विषय रस के लिए छाती अड़ा देते हैं, वो नहीं; सच्चा रसिक कौन है?

**यत्रोत्तमश्लोक गुणानुवादः**
**प्रस्तूयते ग्राम्यकथा विघातः ॥**

(भा. ५/१२/१३)

जहाँ हर समय उत्तम श्लोक भगवान् की चर्चा होती है, वो हैं संत, वे हैं रसिक, गप्प मारने वाले नहीं ।

* ब्रजवासी ही श्री कृष्ण हैं, यही भाव ब्रज उपासना है, यहाँ का सब कुछ कृष्ण है ।

**राधेरानी मोहि अपनी कर लीजै ।**
**पशु, पक्षी या वन के,**
**चरन सरन रख लीजै ॥**

इतना ऊँचा संत नहीं बनना चाहिए कि हम ब्रजवासियों में अभाव करें, तिरस्कार करें ।

* हमारा अभाव ही कष्ट बनकर आता है । सबसे बड़ा पाप ये है कि जब हम किसी की बुराइयों को सुनते हैं, कहते हैं ।

* ये शरीर कुत्तों का भोजन है, इतनी गंदी चीज में हम अहंता–ममता करते हैं तो भगवान् कहाँ से आ जाएगा? देह-गेहादि की आसक्ति अन्धा कर देती है जीव को । इसको जितना छोड़ोगे, उतना ही भगवान् प्रसन्न होगा । ब्रज-गोपियों ने लोक-वेद की मर्यादाएँ, संसार के सम्बन्ध आदि

सब कुछ श्री कृष्ण के लिए छोड़ दिए, इसलिए ब्रज गोपियों के भगवान् कृष्ण ऋणी हो गए ।

* पुरुष हो, स्त्री हो या चर-अचर कोई भी हो जो सर्वभाव से भगवान् की भक्ति करता है, कपट को छोड़ देता है, वह भगवान् को परम प्रिय है ।

* भगवान् की एकमात्र अनन्य भक्ति जिसके हृदय में है, उस हृदय में भगवान् कैदी की तरह (१० नंबर के कैदी की तरह) घुस जाते हैं परन्तु हमारा दुर्भाग्य देखो कि उस भक्ति को हम लोग मान–सम्मान, विषय–भोग, पैसा आदि के लिए बेच देते हैं ।

* मनुष्य अपनी सत्ता जब अलग मान लेता है तब वो भगवान् से दूर चला जाता है ।

* मनुष्य अपने सुख के अनन्त सागर बना ले, तीन लोक की सम्पत्तियाँ इकट्ठी कर ले, इन्द्र बन जाय, ब्रह्मा बन जाय, रसातल का राज्य मिल जाय लेकिन भगवान् की शरण के बिना उसको कभी नहीं सुख मिलेगा ।

* भगवान् के लिए सब छोड़ोगे तो भगवान् तुम्हारा ऋणी हो जायेगा ।

* अपनी सत्ता खत्म कर दो, अपने 'मैं' को खत्म कर दो, अपनी ममता को खत्म कर दो, बस यही शरणागति है ।

* छोटे बन जाओ, तो माया को पार हो जाओगे और बड़े बनते जाओगे तो माया खा जाएगी । लेकिन हम लोग बड़ा बनते हैं, गद्दी चाहते हैं,

नाम चाहते हैं, तो माया क्या करेगी? पटक देगी।

* अगर कोई भक्त तुम्हारा तिरस्कार करे, मारे-पीटे, तब भी उसकी अर्चना-पूजा करो । उसकी लात-जूता खाकर भी सन्तुष्ट हो जाओ, मुस्कुराओ कि हमें कृपा मिली है, जाकर उसको मनाओ । भगवान् कहते हैं–ऐसा करने पर तुम हमको उसी समय पा जाओगे ।

* 'मैं' और 'मेरापन' जब तक जीवित है तब तक तुम्हारे भीतर माया है ।

* ब्रजोपासक बनना है तो सम्मान की भूख नहीं रखनी चाहिए, गँवार बन जाओ । अरे, ब्रज में तो परमेश्वर भी गाली खाता है । इसी का नाम ब्रजोपासना है ।

* भक्त वही है जो न किसी के रूप की सत्ता मानता है, न बल की और न धन ...आदि की । कोई काली आँख, गोरे गाल वाली दिखी और हम कुत्ता बनकर उसके पीछे चल दिए तो हम भक्त कहाँ रह गये ? इसी तरह स्त्री को कोई गोरा-चिट्टा पुरुष मिल गया और वह कुतिया बनकर उसके पीछे लग गई तो वह भक्ता कहाँ रही, कुतिया बन गई । इसीलिए सत्ता केवल भगवान् के नाम, रूप और बल की है ।

* जब तक तुम्हारा मन असंयत है तब तक किसी साधन का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

* सच्चे हितैषी भगवान् ही हैं । जब मनुष्य मर जाता है तो प्यारी से प्यारी स्त्री, पुत्र, पारिवारिक सगे-सम्बन्धी लोग मृतक शव को जल्दी से

जल्दी घर से बाहर ले जाते हैं और जला देते हैं; ये सब तुझे घर से निकालें, इससे पहले ही तू खुद निकल जा और सब कुछ छोड़ दे, एकमात्र प्रभु की शरण ग्रहण कर, उन्हीं का आश्रय पकड़, अगर भगवान् का आश्रय लेगा तो मृत्यु तो छोटी चीज है, साक्षात् काल भी तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है ।

* भगवान् के भक्त को संसारी सुख-सुविधाएँ अच्छी नहीं लगती हैं । मछली को दूध में रखो तो मर जायेगी, वह तो पानी में जियेगी । उसी तरह कृष्ण-भक्त को संसार के सुखों में रख दो तो वह मर जाएगा । जो लोग संसार के सुख चाहते हैं तो इसका मतलब उनका मन भगवान् में नहीं है ।

* जो वासनाओं का भिखारी है, धन-सम्पत्ति, भोगों का लोलुप है, वह भक्त न था और न होगा ।

* भगवान् से प्रेम करना है तो कुछ मत सोचो । अपना योगक्षेमादि सब भगवान् पर छोड़ दो क्योंकि भगवान् को अपना बनाने के लिए सब कुछ छोड़ना पड़ता है ।

* कबीर दास जी ने भी कहा है –

**कबिरा सब जग निर्धना, धनवंता नहीं कोय ।**
**धनवंता सोइ जानिए, राम नाम धन होय॥**

अरे ! जो पैसों को पकड़ता है, वो धनवान-बनवान कुछ नहीं वो तो महा भिखमंगा है; सबसे बड़ा धन तो प्रभु है पर हम लोग साधु बनकर भी पैसे को पकड़ते हैं, लड्डू-पेड़ा, भोगों

को पकड़ते हैं फिर भगवान् कहाँ से मिल जाएगा ।

मीरा जी ने भी कहा है –

**'पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो ।'**

जब भगवान् सच्चा धन है तो फिर पैसों को क्यों पकड़ता है ? जो भगवान को छोड़कर पैसे को पकड़े, वो भक्त नहीं है ।

* भागवत में कहा गया है –

**यावद् भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।**
**अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति ॥**

(भा. ७/१४/८)

तुम्हारे पेट का गड्ढा जितने में भर जाय, बस इतना अधिकार है तुम्हारा । इससे ज्यादा जो

अपना मानता है, संग्रह करता है, वह चोर है और दण्ड पायेगा । क्या दण्ड मिलेगा ?

भगवान् ने स्वयं कहा –

**'इह चात्मोपतापाय मृतस्य नरकाय च ॥'**

(भा. ११/२३/१५)

जब तक जीवित हो, वह पैसा तुम्हें ताप-संताप देगा और मरने के बाद निश्चित नरक मिलेगा, इसमें शंका नहीं करना, यह स्वयं भगवान् कह रहे हैं ।

***************

# कुछ महत्वपूर्ण दोहे

राम नाम को अंक है सब साधन हैं सून ।
अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहें दस गून ॥
राम प्रेम पथ पेखिऐ दिएँ बिषय तन पीठि ।
तुलसी केंचुरि परिहरें होत साँपहू दीठि ॥
आठ गाँठ कौपीन में औ भाजी बिनु लोन ।
तुलसी रघुबर उर बसैं, इंद्र बापुरो कौन ॥
एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास ।
एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास ॥
जहाँ काम तहाँ राम नहिं जहाँ राम नहिं काम
तुलसी कहो कैसे रहें रवि रजनी इक ठाम ॥
तुलसी जाके मुखन तें धोखेहु निकसत राम ।
ताके पग की पगतरी मोरे तन को चाम ॥
अन्तर्यामी गर्भगत साधु सुंदरि माहिं ।
तुलसी पोषे एक के दोनों पोषे जाहिं ॥
कबीरा निंदक ना मिलै पापी मिलै हजार ।
एक निन्दक के शीश पर कोटिन पाप पहाड़

आवत गाली एक है पलटत होय अनेक ।
कबीरा ताही न पलटिए रही एक की एक ॥
चाह गई चिंता मिटी मनुआँ बेपरवाह ।
जिनको कछू न चाहिए सोई साहंसाह ॥
राधा राधा नाम कूँ सपने हू जो लेत ।
ताकौ मोहन सांवरौ, रीझ अपन कों देत ॥
मुक्ति कहै गोपाल सों मेरी मुक्ति बताय ।
ब्रज रज उड़ि मस्तक लगै मुक्ति मुक्त ह्वै जाय
व्यास पराई कामिनी कारी नागिन जानि ।
छूवत ही मर जावेगो गरुड़ मन्त्र नहिं मानि ॥
नैन न मूँदे ध्यान को अंग न कीन्हे न्यास ।
नाच-गाय रासहि मिले, करि वृन्दावन वास ॥
नारायन मैं सत्य कहौं भुजा उठाय के आज ।
जो तू बने गरीब तो मिलें गरीब-निवाज ॥
दो बातन को भूलि मति जो चाहत कल्यान ।
नारायन इक मौत कूँ दूजे श्री भगवान् ॥
नारायन हरि भजन में यह पाँचों न सुहात ।
बिषय भोग निद्रा हँसी जगत प्रीति बहु बात
ब्रह्मादिक के भोग सुख विष सम लागत ताहि
नारायन ब्रज-चंद्र की लगन लगी है जाहि ॥

नारायन मैं सत्य कहौं भुजा उठाय के आज ।
जो तू बने गरीब तो मिलें गरीब निवाज ॥
तेरे भावैं कछु करौ भलो बुरौ संसार ।
नारायन तू बैठि के अपनौ भवन बुहार ॥
धन जोबन यों जायगा जा बिधि उड़त कपूर ।
नारायन गोपाल भज क्यों चाटे जग धूर ॥
दयो राम को ले हम आशा करें न अन्य ।
लाख खाक सम दैं तजि राखें भक्ति अनन्य ॥
श्वास श्वास कृष्ण भज वृथा श्वास जनि खोय ।
न जाने या श्वास को आवन होय न होय ॥
साधु निंदा अति बुरी भूलि करो जिन कोय ।
जनम जनम के सुकृत पल में डारै धोय ॥
सौ पापन का मूल है एक रुपैया रोक ।
साधु होय संग्रह करै मिटै न संशय शोक ॥

**********